فَأَنْتَ وَلِيُّ كُلِّ نِعْمَةٍ وَمُنْتَهٰى كُلِّ رَغْبَةٍ

कि तू हर नेअमत का वली और हर रगबत की आखरी मंज़ील है।

आअमाले आशूरा

तरजुमे के साथ

अल्लामा सय्यद ज़ीशान हैदर जवादी (आलल्लाहो मकामहू)

तरतीब व पेशकश:

शेख मोहम्मद वसी

मेहदी टूर्स अॅन्ड ट्रावेल्स

आअमाले आशूरा

रवायत में निम्नलिखित कलेमात की तालीम दी गई है:

१. जहां तक मुम्किन हो इन्सान को यह दिन यादे इमाम (अ.स.) और इबादते इलाही में गुज़ारना चाहिए। चाहे वह सलवात की तकरार ही से क्यों न हो इसमें ज़िक्रे खुदा, ज़िक्रे रसूल (स.अ.व.व.) और ज़िक्रे आले रसूल (अ.स.) सब कुछ पाया जाता है और इस से ज़्यादा आसान तरीका यादे खुदा और रसूल (स.अ.व.व.) और नोज़ूले रहमत का कुछ नहीं है।

२. अपना अंदाज़ एक सोगवार इन्सान का अंदाज़ रखना चाहिए। आस्तीनें उलटी रहें। गरेबान खुला रहे और जब एक दूसरे से मुलाकात हो तो घर वालों की खैरियत दर्याफ्त करने के बजाए यह फिकरात अदा करे:

اَعْظَمَ اللهُ اُجُوْرَنَا وَ اُجُوْرَكُمْ بِمُصَابِنَا بِالْحُسَيْنِ عَلَيْهِ
السَّلَامُ وَ جَعَلَنَا وَ اِيَّاكُمْ مِنَ الطَّالِبِيْنَ بِثَارِهٖ مَعَ وَلِيِّهٖ
الْاِمَامِ الْمَهْدِيِّ مِنْ آلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ

अल्लाह हमारे और आप के अज्र को इमाम हुसैन (अ.स.) के गम में अज़ीम तरीन करार दे और हमें और आप को उनके फरज़न्द इमाम महदी (अ.त.फ.श.) के साथ उन के खुने नाहक का इन्तेकाम लेने वालों में करार दे।

३. एक हज़ार मर्तबा सूरह कुल्होवल्लाह की तिलावत करे और उस में खुदा की वहदानीयत और उसकी बेनियाज़ी का एलान है और उससे एहसास पैदा होता है कि इन्सान उसका वाकई बन्दा बन जाए तो वह उसे यक्ताए रोज़गार और बेनियाज़े काएनात बना देता है।

दुआए इमाम हुसैन (अ.स.) (रोज़े आशूरा)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ ثِقَتِيْ فِيْ كُلِّ كَرْبٍ وَرَجَائِيْ فِيْ كُلِّ شِدَّةٍ

खुदाया तू हर रंज में मेरा सहारा और हर शिद्दत में मेरी उम्मीद है

وَاَنْتَ لِيْ فِيْ كُلِّ اَمْرٍ نَزَلَ بِيْ ثِقَةٌ وَعُدَّةٌ

मैं हर नाज़िल होने वाली मुसीबत में तुझ ही पर भरोसा रखता हूँ

كَمْ مِنْ هَمٍّ يَضْعُفُ فِيْهِ الْفُؤَادُ

कितने रंजो गम ऐसे हैं जिनके तहम्मुल से दिल आजिज़ होते हैं और राहे तदबीर बंद होती है

وَتَقِلُّ فِيْهِ الْحِيْلَةُ وَيَخْذُلُ فِيْهِ الصَّدِيْقُ

और दोस्त साथ छोड़ देते हैं और दुश्मन ताने देते हैं

وَيَشْمَتُ فِيْهِ الْعَدُوُّ اَنْزَلْتُهٗ بِكَ وَشَكَوْتُهٗ اِلَيْكَ

लेकिन जब मैं ने तेरे हवाले कर दिया और तुझ से फर्याद की

رَغْبَةً مِنِّيْ اِلَيْكَ عَمَّنْ سِوَاكَ فَكَشَفْتَهٗ وَفَرَّجْتَهٗ

और सब को छोड़ कर तेरी तरफ तवज्जोह की तो तूने उस रंज को दूर कर दिया और उस मुसीबत को दफा कर दिया

إِنَّهُ سَمِيعُ الدُّعَاءِ قَرِيبٌ مُّجِيبٌ.

कि वह दुआओं का सुनने वाला करीब और मोजीब है।

४. इस फिकरे की मुसलसल तकरार करता रहे:

يَالَيْتَنِي كُنْتُ مَعَكُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا.

अय करबला के शहीदो! काश हम भी तुम्हारे साथ होते और यह अज़ीम कामयाबी हासिल कर लेते।

५. इस फिकरे को बराबर दोहराता रहे:

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ الْحُسَيْنِ وَ اَوْلَادِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ

खुदाया! इमाम हुसैन (अ.स.) और उनकी अवलाद और उनके अस्हाब के कातिलों पर लानत फरमा।

गिर्याओ ज़ारी, नव्हाओ मातम के अलावा रोज़े आशूरा इन दस आमाल की हिदायत मासूमीन (अ.स.) की तरफ से वारिद हूई है लेहाज़ा इनका खयाल रखना बेहद ज़रूरी है ताकि इज़्हारे रंजो अलम के साथ इत्तेबाए मासूमीन (अ.स.) का हक भी अदा हो जाए।

१. चार रकअत नमाज़ अदा करे। पहली रकअत में सूरए हम्द के बाद सूरए कुल या अय्योहल काफेरून। दूसरी रकअत में सूरए हम्द के बाद सूरए कुल होवल्लाह। तीसरी रकअत में सूरए हम्द के बाद सूरए अहज़ाब और चौथी रकअत में सूरए हम्द के बाद सूरए मुनाफेकून। (वाज़ेह रहे कि यह नमाज़ दो-दो रकअत करके अदा की जाएगी कुरबतन एलल्लाह।)

२. ज़ियारते रोज़े आशूरा।

३. दो रकअत नमाज़े ज़ियारत।

४. सौ (१००) मर्तबा इमाम आली मकाम (अ.स.) पर सलाम।

५. सौ (१००) मर्तबा एहले बैत (अ.स.) के दुश्मनों पर लानत।

६. कातेलाने इमाम हुसैन (अ.स.) पर लानत।

७. मुख्तसर दुआए सजदा।

८. दुआए अल्कमा।

९. सात (७) मर्तबा आगे बढ़ना और पीछे आना (इन्नालिल्लाह की तकरार के साथ)।

१०. ज़ियारते ताज़ीयत (आखिरे रोज़े आशूरा)।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِيْ وَلَدِكَ الْحُسَيْنِ

सलाम हो आप पर अय अमीरिल मोमेनीन (अ.स.) अल्लाह आप को वेहतरीन सब्र इनायत करे आप के फर्ज़न्द हुसैन (अ.स.) के गम में

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِيْ اَخِيْكَ الْحُسَيْنِ

सलाम हो आप पर अय अबू मोहम्मद हसन (अ.स.) अल्लाह आप को वेहतरीन सब्र इनायत करे आप के फर्ज़न्द हुसैन (अ.स.) के गम में

يَا مَوْلَايَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اَنَا ضَيْفُ اللّٰهِ وَ ضَيْفُكَ

अय मेरे मौला, अय अबा अब्दिल्लाह मैं आप के परवरदिगार का मेहमान हूँ

وَجَارُ اللّٰهِ وَ جَارُكَ وَلِكُلِّ ضَيْفٍ وَّ جَارٍ قِرًى وَّ قِرَايَ فِيْ هٰذَا الْوَقْتِ

आप के और उसके जवारे रहमत में हूँ और हर मेहमान और हमसाये का एक हक्के मेहमानी होता है

اَنْ تَسْئَلَ اللّٰهَ سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰى اَنْ يَّرْزُقَنِيْ فَكَاكَ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ

मेरी मेहमानी इस वक्त सिर्फ यह है कि आप परवरदिगार से यह सवाल करें कि वह मुझे मेरी गर्दन को आतिशे जहन्नम से रिहाई इनायत फरमाए

اَلسَّلَامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلْدِ جَعْفَرٍ وَّ عَقِيْلٍ

मेरा सलाम अल्लादे जाफरो अकील के शोहदा पर

اَلسَّلَامُ عَلٰى كُلِّ مُسْتَشْهِدٍ مَّعَهُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

मेरा सलाम तमाम साहेबे ईमान शोहदा पर

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ بَلِّغْهُمْ عَنِّيْ تَحِيَّةً كَثِيْرَةً وَّ سَلَامًا

खुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़िल फरमा और उन तक मेरी तहीय्यत और मेरा सलाम पहोंचा दे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِيْ وَلَدِكَ الْحُسَيْنِ

सलाम हो आप पर अय रसूले अकरम (स.अ.व.व.) अल्लाह आप को बेहतरीन सब्र इनायत करे आप के फर्ज़न्द हुसैन (अ.स.) के गम में

اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَكِ الْعَزَآءَ فِيْ وَلَدِكِ الْحُسَيْنِ

सलाम हो आप पर अय फातेमा ज़हरा (स.अ.) अल्लाह आप को बेहतरीन सब्र इनायत करे आप के फर्ज़न्द हुसैन (अ.स.) के गम में

सूरए अहज़ाब और मुनाफेकून क्यों ?

एक सवाल यह पैदा होता है कि आशूरा के दिन इस नमाज़ के लिए सूरए अहज़ाब और सूरए मुनाफेकून का इन्तेखाब क्यों किया गया है? तो शायद इसका राज़ यह हो के सूरए अहज़ाब में रसूले अकरम (स.अ.व.व.) और उनके अहले बैत (अ.स.) की अज़मत का तज़केरा है और सूरए मुनाफेकून में उन लोगों की मज़म्मत है जिनकी ज़बान पर कलमए रिसालत था लेकिन उनके दिल कुफ्फार के साथ थे जो लश्करे यज़ीद का मुकम्मल किरदार था।

इस सिल्सिले में सूरए अहज़ाब की निम्नलिखित आयतों को बतौरे नमूना पेश किया जा सकता है:

१. इब्तेदाई आयत में सरकार (स.अ.व.व.) के उसूले ज़िन्दगी का तज़केरा है।

२. आयत नं. ६ में आप की अव्वलियत और आप के इस्तेहकाक का तज़केरा है।

३. आयत नं. १० से आयत नं. २७ तक मुसलमानों की आज़माइश, उनके सेबातो इस्तेक्लाल और मुनाफेकीन की रविशो साज़िश का नकशा खींचा गया है।

४. आयत नं. ३३ में अहले बैत (अ.स.) की तहारत का एलान किया गया है और साथ ही साथ अज़वाजे पैगम्बर (स.अ.व.व.) को तम्बीह की गई है ताकि कोई शख्सियत कानून से बालातर न बनने पाए।

५. आयत नं. ३६, ४०, ४६, ५० में पैगम्बरे इस्लाम (स.अ.व.व.) की अज़मतो शख्सियतो हैसियत का एलान किया गया है।

६. आयत नं. ५३ में उम्मत को एहतेरामे पैगम्बर (स.अ.व.व.) की तालीम दी गई है ताकि एहसास पैदा हो कि खयामे हुसैनी पर हम्ला करने वालों ने किस कदर आयत को पामाल किया है।

७. आयत नं. ५६ में रसूले अकरम (स.अ.व.व.) पर सलवातो सलाम का हुक्म दिया गया है जिस की तशरीह हुज़ूर (स.अ.व.व.) ने आल (अ.स.) पर सलवात के साथ फरमाई है।

८. आखरी आयत में इन्सान की अज़ीम ज़िम्मेदारी का ज़िक्र किया गया है और यह वाज़ेह किया गया है कि यह किस तरह बड़ी बड़ी ज़िम्मेदारियों को संभाल लेता है और अपने नफ्स पर ज़ुल्म करता है।

९. सूरए मुनाफेकून के आगाज़ में मुनाफेकीन के अकीदे और आमाल की मुकम्मल तस्वीरकशी की गई है।

१०. सूरए मुनाफेकून के आखिर में साहेबाने ईमान को यादे खुदा की तरफ मुतवज्जेह रहने और राहे खुदा में कुरबानीयों का हुक्म दिया गया है।

يَابْنَ سَيِّدِ الْعَالَمِيْنَ وَ عَلَى الْمُسْتَشْهَدِيْنَ مَعَكَ

अय आलमीन के सरदार के फर्ज़न्द और आप के साथ तमाम शहीद होने वालों पर

سَلَامًا مُّتَّصِلاً مَّا تَّصَلَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ

वह सलाम जिसका सिलसिला रात और दिन के साथ काएम रहे

اَلسَّلَامُ عَلَى الْحُسَيْنِ ابْنِ عَلِيٍّ الشَّهِيْدِ

मेरा सलाम हुसैन इब्ने अली (अ.स.) शहीद पर

اَلسَّلَامُ عَلٰى عَلِيِّ ابْنِ الْحُسَيْنِ الشَّهِيْدِ

मेरा सलाम अली इब्निल हुसैन (अ.स.) शहीद पर

اَلسَّلَامُ عَلٰى عَبَّاسِ ابْنِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ الشَّهِيْدِ

मेरा सलाम अब्बास इब्ने अमीरिल मोमेनीन (अ.स.) शहीद पर

اَلسَّلَامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلْدِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

मेरा सलाम अल्लादे अमीरिल मोमेनीन के शोहदा पर

اَلسَّلَامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلْدِ الْحَسَنِ

मेरा सलाम अल्लादे इमाम हसन (अ.स.) के शोहदा पर

اَلسَّلَامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلْدِ الْحُسَيْنِ

मेरा सलाम अल्लादे इमाम हुसैन (अ.स.) के शोहदा पर

ज़ियारते आशूरा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

खुदाए रहमानो रहीम के नाम से शुरू करता हूँ।

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا اَبَا عَبۡدِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا ابۡنَ رَسُولِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय अबू अब्दिल्लाह (अ.स.)! सलाम हो आप पर अय फरज़न्दे रसूलल्लाह (स.अ.व.व.)!

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَابۡنَ اَمِيۡرِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَ ابۡنَ سَيِّدِ الۡوَصِيِّيۡنَ

सलाम हो आप पर अय अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) और सय्यदुल वसीय्यीन के फरज़न्द!

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَابۡنَ فَاطِمَةَ الزَّهۡرَاءِ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الۡعَالَمِيۡنَ

सलाम हो आप पर अय आलमीन की खवातीन की सरदार फातेमा ज़हरा (स.अ.) के फरज़न्द!

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا ثَارَ اللّٰهِ وَابۡنَ ثَارِهٖ وَ الۡوِتۡرَ الۡمَوۡتُوۡرَ

सलाम हो आप पर अय वह शहीदे राहे खुदा, जिस के खून का इन्तेकाम परवरदिगार के ज़िम्मे है और जो तन्हा रह गया था।

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ وَ عَلَى الۡاَرۡوَاحِ الَّتِيۡ حَلَّتۡ بِفِنَائِكَ

सलाम हो आप पर और उन रूहों पर जिन्होंने आप के जवार में कयाम किया।

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا مَوۡلَايَ يَا اَبَا عَبۡدِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय मेरे मौला अबा अब्दिल्लाह

يَابۡنَ خَاتَمِ النَّبِيِّيۡنَ وَابۡنَ سَيِّدِ الۡوَصِيِّيۡنَ

अय खातमुन नबीय्यीन और सय्यदुल वसीय्यीन के फर्जन्द

وَيَابۡنَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الۡعَالَمِيۡنَ

और अय सय्यदा नेसाइल आलमीन के लाल

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا شَهِيۡدُ يَابۡنَ الشَّهِيۡدِ يَا اَخَا الشَّهِيۡدِ يَا اَبَا الشُّهَدَآءِ

सलाम हो आप पर अय शहीद, इब्ने शहीद, बिरादरे शहीद और पदरे शोहदाए केराम

اَللّٰهُمَّ بَلِّغۡهُ عَنِّيۡ فِيۡ هٰذِهِ السَّاعَةِ وَفِيۡ هٰذَا الۡيَوۡمِ

खुदाया उन तक पहोंचा दे इसी साअत, आज ही के दिन

وَفِيۡ هٰذَا الۡوَقۡتِ وَفِيۡ كُلِّ وَقۡتٍ تَحِيَّةً كَثِيۡرَةً وَّ سَلَامًا

इसी वक्त और हर वक्त मेरी तरफ से तहीय्यत और सलामे कसीर

سَلَامُ اللّٰهِ عَلَيۡكَ وَ رَحۡمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अल्लाह का सलाम आप पर और उसकी रहमत व बरकत

فَإِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की वारगाह में जाने वाले हैं

وَ صَلَوٰتُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ وَ تَحِيَّاتُهٗ عَلَيْكَ

अल्लाह की तरफ से सलवात, बरकात, तहीयात आप के लिए

وَ عَلٰى اٰبَآئِكَ الطَّاهِرِيْنَ الطَّيِّبِيْنَ الْمُنْتَجَبِيْنَ

और आप के आबाए तय्यबीनो ताहेरीन के लिए

وَ عَلٰى ذَرَارِيْهِمُ الْهُدَاةِ الْمَهْدِيِّيْنَ

और उनकी हिदायत याफता और रहनुमा ज़ुर्रीयत के लिए

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ وَ عَلَيْهِمْ

सलाम हो आप पर अय मेरे मौला और उन तमाम हज़रात पर

وَ عَلٰى رُوْحِكَ وَ عَلٰى اَرْوَاحِهِمْ وَ عَلٰى تُرْبَتِكَ وَ عَلٰى تُرْبَتِهِمْ

आप की रूह पर और उन सब की पाक रूहों पर आप की खाके पाक पर और उन सब की पाक तुरबत पर

اَللّٰهُمَّ لَقِّهِمْ رَحْمَةً وَّ رِضْوَانًا وَّ رَوْحًا وَّ رَيْحَانًا

खुदाया उन सब को रहमत, रिज़वान, राहत, सुकून इनायत फरमा

عَلَيْكُمْ مِنِّيْ جَمِيْعًا سَلَامُ اللّٰهِ اَبَدًا

आप पर हमेशा परवरदिगार का सलाम।

مَا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ

जब तक मैं बाकी रहूँ और शबो रोज़ बाकी रहें।

يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ لَقَدْ عَظُمَتِ الرَّزِيَّةُ

या अबा अब्दिल्लाह! यह हादसा बड़ा अज़ीम है।

وَ جَلَّتْ وَ عَظُمَتِ الْمُصِيْبَةُ بِكَ عَلَيْنَا وَ عَلٰى جَمِيْعِ اَهْلِ الْاِسْلَامِ

और यह मुसीबत बड़ी जलीलो अज़ीम है हमारे लिए और तमाम अहले इस्लाम के लिए

وَ جَلَّتْ وَ عَظُمَتْ مُصِيْبَتُكَ فِي السَّمٰوَاتِ

आप की मुसीबत जलीलो अज़ीम है आसमानों में

عَلٰى جَمِيْعِ اَهْلِ السَّمَاوَاتِ

तमाम आसमान वालों के लिए

فَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسَّسَتْ اَسَاسَ الظُّلْمِ وَ الْجَوْرِ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ

तो अल्लाह लानत करे उस कौम पर जिस ने आप के अहले वैत (अ.स.) पर ज़ुल्मो जौर

की बुनियाद डाली है

وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً دَفَعَتْكُمْ عَنْ مَقَامِكُمْ

और अल्लाह लानत करे उस कौम पर जिस ने आप को आप के मकाम से हटा दिया है

وَ اَزَالَتْكُمْ عَنْ مَرَاتِبِكُمُ الَّتِيْ رَتَّبَكُمُ اللّٰهُ فِيْهَا

और उस मर्तवे से गिरा दिया है जिस पर खुदा ने आप को रखा था

وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً قَتَلَتْكُمْ

और अल्लाह लानत करे उस उम्मत पर जिस ने आप को कत्ल किया

وَلَعَنَ اللّٰهُ الْمُمَهِّدِيْنَ لَهُمْ بِالتَّمْكِيْنِ مِنْ قِتَالِكُمْ

और अल्लाह लानत करे उस कौम पर जिस ने उन ज़ालिमों के लिए आप से जंग करने की ज़मीन हम्वार की है

بَرِئْتُ اِلَى اللّٰهِ وَاِلَيْكُمْ مِنْهُمْ وَمِنْ اَشْيَاعِهِمْ وَ اَتْبَاعِهِمْ وَ اَوْلِيَائِهِمْ

मैं खुदा और आप की बारगाह में उन सब से बराअत करता हूँ और उनके पैरवकारों, चाहने वालों और इत्तेवा करने वालों से

يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اِنِّيْ سِلْمٌ لِمَنْ سَالَمَكُمْ

या अबा अब्दिल्लाह! मैं आप से सुल्ह करने वालों के लिए सरापा सुल्ह

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوِتْرُ الْمَوْتُوْرُ

सलाम हो आप पर अय वह तन्हा जिस के साथ कोई न रह गया

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمَامُ الْهَادِي الزَّكِيُّ وَعَلٰى اَرْوَاحٍ حَلَّتْ بِفِنَآئِكَ

सलाम हो आप पर अय इमामे हादी, पाकीज़ा खेसाल और उन रूहों पर जो आप के हमराह हैं

وَ اَقَامَتْ فِيْ جِوَارِكَ وَوَفَدَتْ مَعَ زُوَّارِكَ

और आप के जवार में मोकीम हैं और आप के ज़व्वार के साथ हाज़िर होती हैं

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنِّيْ مَا بَقِيْتُ وَبَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ

सलाम हो आप पर मेरी तरफ से जब तक मैं बाकी रहूं और रात और दिन बाकी रहें

فَلَقَدْ عَظُمَتْ بِكَ الرَّزِيَّةُ وَجَلَّ الْمُصَابُ

आप का हादसा बहोत अज़ीम और आप की मुसीबत बहोत जलील है

فِي الْمُؤْمِنِيْنَ وَفِي الْمُسْلِمِيْنَ وَفِيْ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ اَجْمَعِيْنَ

तमाम मुस्लेमीन और मोमेनीन और तमाम अहले आसमान के लिए

وَفِيْ سُكَّانِ الْاَرَضِيْنَ

और तमाम अहले ज़मीन के लिए

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَنِ الشَّهِيْدِ سِبْطِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय हसन (अ.स.) शहीद के वारिस जो नवासए पैगम्बर थे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय फरज़ंदे रसूले अकरम (स.अ.व.व.)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ الْبَشِيْرِ النَّذِيْرِ وَابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ

सलाम हो आप पर अय बशीर और नज़ीर के फरज़ंद सलाम हो आप पर अय अस्सेया के सरदार के फरज़ंद

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ

सलाम हो आप पर अय खवातीने आलम की सरदार हज़रत फातेमा ज़हरा (स.अ.) के फरज़ंद

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय अबा अब्दिल्लाह

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ اللّٰهِ وَابْنَ خِيَرَتِهٖ

सलाम हो आप पर अय मुन्तखबे परवरदिगार और फरज़ंदे मुन्तखबे परवरदिगार

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللّٰهِ وَابْنَ ثَارِهٖ

सलाम हो आप पर जिस के खून और उस के पदरे बुज़ुर्गवार के खून का इन्तेकाम खुदा लेने वाला है

وَحَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

और आप से जंग करने वालों के लिए कयामत तक सरापा जंग हूँ

وَلَعَنَ اللّٰهُ آلَ زِيَادٍ وَآلَ مَرْوَانَ وَلَعَنَ اللّٰهُ بَنِيْ اُمَيَّةَ قَاطِبَةً

और अल्लाह लानत करे आले ज़ियाद और आले मरवान पर और लानत करे तमाम बनी उमय्या पर

وَلَعَنَ اللّٰهُ ابْنَ مَرْجَانَةَ وَلَعَنَ اللّٰهُ عُمَرَ بْنَ سَعْدٍ وَلَعَنَ اللّٰهُ شِمْرًا

और लानत करे इब्ने मर्जाना (इब्ने ज़ियाद) पर और लानत करे उमर इब्ने साद और लानत करे शिम्र पर

وَلَعَنَ اللّٰهُ اُمَّةً اَسْرَجَتْ وَاَلْجَمَتْ وَتَنَقَّبَتْ لِقِتَالِكَ

और लानत करे उस कौम पर जिस ने ज़ीन कसा और लगाम लगाई और नकाब पहनी आप से जंग करने के लिए

بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ لَقَدْ عَظُمَ مُصَابِيْ بِكَ فَاَسْئَلُ اللّٰهَ الَّذِيْ اَكْرَمَ مَقَامَكَ

आप पर मेरे माँ बाप कुरबान आप की मुसीबत मेरे लिए बहुत अज़ीम है। मैं उस खुदा से सवाल करता हूँ जिस ने आप के मकाम को मोहतरम बनाया है।

وَاَكْرَمَنِيْ بِكَ اَنْ يَرْزُقَنِيْ طَلَبَ ثَارِكَ

और आप की वजह से मुझे भी इज़्ज़त दी है कि मुझे नसीब करे आप के दुश्मनों से

रोज़े आशूरा की ज़ियारते ताज़ीयत

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اٰدَمَ صِفْوَةِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय आदम सफीउल्लाह के वारिस

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحٍ نَبِيِّ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय नूह नवीए खुदा के वारिस

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय इब्राहीम खलीलुल्लाह के वारिस

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوْسٰى كَلِيْمِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय मूसा कलीमुल्लाह के वारिस

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيْسٰى رُوْحِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय ईसा रूहुल्लाह के वारिस

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय मोहम्मद (स.अ.व.व.) हबीबुल्लाह के वारिस

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عَلِيٍّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيِّ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर अय अली (अ.स.) अमीरुल मोमेनीन वलीयुल्लाह के वारिस

مَعَ اِمَامٍ مَنْصُوْرٍ مِنْ اَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ

उस इमाम के साथ जिस की नुसरत का वादा किया गया है पैगम्बरे इस्लाम (स.अ.व.व.) के अहले बैत (अ.स.) में से

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ عِنْدَكَ وَجِيْهًا بِالْحُسَيْنِ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ

खुदाया मुझे अपनी बारगाह में आबरूमंद करार दे दे हुसैन (अ.स.) के सदके में दुनिया और आखेरत में

يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ اِنِّيْ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلٰى رَسُوْلِهٖ وَ اِلٰى اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

या अवा अब्दिल्लाह ! मैं अल्लाह की तरफ, रसूले अकरम (स.अ.व.व.) और अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) की तरफ

وَ اِلٰى فَاطِمَةَ وَ اِلَى الْحَسَنِ وَ اِلَيْكَ بِمُوَالَاتِكَ

जनावे फातेमा (अ.स.) और इमाम हसन (अ.स.) की तरफ और आप की तरफ नज़दीकी चाहता हूँ आप की मोहब्बत

وَ بِالْبَرَائَةِ مِمَّنْ قَاتَلَكَ وَ نَصَبَ لَكَ الْحَرْبَ

और आप के कातिलों और दुश्मनों से बराअत के ज़रीए

وَ بِالْبَرَآئَةِ مِمَّنْ اَسَّسَ اَسَاسَ الظُّلْمِ وَ الْجَوْرِ عَلَيْكُمْ

और उन से बेज़ारी के ज़रीए जिन्होंने आप पर ज़ुल्मो जौर की बुनियाद रखी है

وَ اَبْرَأُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلٰى رَسُوْلِهٖ مِمَّنْ اَسَّسَ اَسَاسَ ذٰلِكَ

मैं खुदा और रसूल की बारगाह में बेज़ार हूँ उन तमाम लोगों से जिन्होंने ज़ुल्म की बुनियाद रखी

وَبَنٰى عَلَيْهِ بُنْيَانَهٗ وَجَرٰى فِيْ ظُلْمِهٖ وَجَوْرِهٖ عَلَيْكُمْ وَ عَلٰى اَشْيَاعِكُمْ

या उस की इमारत तय्यार की और आप पर और आप के चाहने वालों पर ज़ुल्मो जौर का सिलसिला जारी रखा

بَرِئْتُ اِلَى اللّٰهِ وَ اِلَيْكُمْ مِنْهُمْ

मैं खुदा और आपकी बारगाह में इज़्हारे बराअत करता हूँ उन सब से

وَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ اِلَيْكُمْ

और खुदा की बारगाह में और फिर आप की जनाब में तक़र्रुब चाहता हूँ

بِمُوَالَاتِكُمْ وَ مُوَالَاةِ وَلِيِّكُمْ وَ بِالْبَرَائَةِ مِنْ اَعْدَائِكُمْ

आप और आप के दोस्तों की मोहब्बत के ज़रीए और आप के दुश्मनों

وَ النَّاصِبِيْنَ لَكُمُ الْحَرْبَ وَ بِالْبَرَائَةِ مِنْ اَشْيَاعِهِمْ وَ اَتْبَاعِهِمْ

और आप से जंग करने वालों से बेज़ारी के ज़रीए और फिर उन सब के इत्तेवा और पैरवकारों से बेज़ारी के ज़रीए

بَعْدَ اَنْ زَهِدَ فِيْكُمَا وَ فِيْ زِيَارَتِكُمَا اَهْلُ الدُّنْيَا

जबकि सारी दुनिया आप से और आप की ज़ियारत से किनारा कश हो गई है

فَلَا خَيَّبَنِيَ اللّٰهُ مِمَّا رَجَوْتُ وَ مَا اَمَّلْتُ

अल्लाह हमारी उम्मीदों को नाउम्मीद न करे और जो कुछ आप की ज़ियारत से आस

فِيْ زِيَارَتِكُمَا اِنَّهٗ قَرِيْبٌ مُجِيْبٌ.

बांधी है उसे बे आस न करे कि वह करीव भी है और कवूल करने वाला भी है।

☆ ☆ ☆

यह कलेमात दोहराते हूए सात मर्तबा आगे बढ़े और फिर पीछे आए:

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ رِضًا بِقَضَآئِهٖ وَ تَسْلِيْمًا لِاَمْرِهٖ

हम अल्लाह के लिए हैं और उसकी बारगाह में पलट कर जाने वाले हैं उसके फैसले पर राज़ी हैं और उसके हुक्म के सामने सरे तस्लीम खम किए हूए हैं।

☆ ☆ ☆

اِنِّی سِلْمٌ لِمَنْ سَالَمَکُمْ وَ حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَکُمْ

मैं सर से पैर तक सुल्ह हूँ उस के लिए जो आप से सुल्ह रखे और सर से पैर तक जंग हूँ उसके लिए जो आप से जंग करे

وَوَلِیٌّ لِمَنْ وَالَاکُمْ وَ عَدُوٌّ لِمَنْ عَادَاکُمْ

मैं आप के दोस्तों का दोस्त और आप के दुश्मनों का दुश्मन हूँ

فَاَسْئَلُ اللّٰهَ الَّذِیْ اَکْرَمَنِیْ بِمَعْرِفَتِکُمْ وَ مَعْرِفَةِ اَوْلِیَائِکُمْ

मेरी इल्तेमास उस मावूद से है जिस ने आप की मारेफत और आप के दोस्तों की मारेफत से नवाज़ा है

وَرَزَقَنِی الْبَرَائَةَ مِنْ اَعْدَائِکُمْ

और आप के दुश्मनों से वराअत की तौफीक दी है

اَنْ یَجْعَلَنِیْ مَعَکُمْ فِی الدُّنْیَا وَ الْآخِرَةِ

कि मुझे दुनिया और आखेरत में आप के साथ करार दे

وَ اَنْ یُثَبِّتَ لِیْ عِنْدَکُمْ قَدَمَ صِدْقٍ فِی الدُّنْیَا وَ الْآخِرَةِ

दुनिया और आखेरत में आप की वारगाह में सावित कदम रखे

وَ اَسْئَلُهٗ اَنْ یُبَلِّغَنِی الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ لَکُمْ عِنْدَ اللّٰهِ

और मेरी दुआ है कि मुझे आप हज़रात के मकामे महमूद तक पहोंचा दे

اَنْ یَشَآءَ ذٰلِكَ وَ یَفْعَلَ فَاِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَجِیْدٌ

कि वह अपनी मशीयत से यह काम कर दे कि वह हमीद भी है और मजीद भी है

اِنْقَلَبْتُ یَا سَیِّدَیَّ عَنْکُمَا تَآئِبًا حَامِدًا لِلّٰهِ شَاکِرًا

मैं आप हज़रात के पास से वापस जा रहा हूँ ताएब बन कर, हम्दे खुदा करते हूए, शुक्रे परवरदिगार के साथ

رَّاجِیًا لِلْاِجَابَةِ غَیْرَ اٰیِسٍ وَلَا قَانِطٍ

कवूलियत का उम्मीदवार बन कर, मायूस हो कर नहीं

آئِبًا عَآئِدًا رَاجِعًا اِلٰی زِیَارَتِکُمَا غَیْرَ رَاغِبٍ عَنْکُمَا

मैं इन्शाअल्लाह फिर आप की ज़ियारत के लिए हाज़िर हूँगा मैं आप से किनारा कश नहीं हूँ

وَلَا عَنْ زِیَارَتِکُمَا بَلْ رَاجِعٌ عَآئِدٌ اِنْشَآءَ اللّٰهُ

और न आप की ज़ियारत से बल्कि इन्शाअल्लाह आऊँगा और पलट कर फिर आऊँगा

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

कोई ताकत और कुव्वत अल्लाह के अलावा नहीं है

یَا سَادَتِیْ رَغِبْتُ اِلَیْکُمَا وَاِلٰی زِیَارَتِکُمَا

अय मेरे सरदार! मैं आपकी तरफ और आप की ज़ियारत की तरफ रगवत रखता हूँ

وَ اَنۡ یَّرۡزُقَنِیۡ طَلَبَ ثَارِیۡ مَعَ اِمَامٍ هُدًی ظَاهِرٍ نَاطِقٍ بِالۡحَقِّ مِنۡكُمۡ

और मुझे नसीब करे आप के खून का इन्तेकाम उस इमामे हादी के साथ जो आप हज़रात के हक का एलान करने वाला है

وَ اَسۡئَلُ اللّٰهَ بِحَقِّكُمۡ وَ بِالشَّاۡنِ الَّذِیۡ لَكُمۡ عِنۡدَهٗ

और मैं परवरदिगार से सवाल करता हूँ आप के हक और उसकी बारगाह में आप की शान का वास्ता दे कर

اَنۡ یُّعۡطِیَنِیۡ بِمُصَابِیۡ بِكُمۡ اَفۡضَلَ مَا یُعۡطِیۡ مُصَابًا بِمُصِیۡبَةٍ مُصِیۡبَةً

कि मुझे इस मुसीबत में उस से बेहतर अज्र अता करे जो किसी भी साहेबे मुसीबत को किसी मुसीबत में अता किया है

مَا اَعۡظَمَهَا وَ اَعۡظَمَ رَزِیَّتَهَا فِی الۡاِسۡلَامِ وَ فِیۡ جَمِیۡعِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ

यह मुसीबत किस कद्र अज़ीम है और उसका हादसा किस कद्र जलील है इस्लाम में और तमाम आस्मानों और ज़मीन में

اَللّٰهُمَّ اجۡعَلۡنِیۡ فِیۡ مَقَامِیۡ هٰذَا مِمَّنۡ تَنَالُهٗ مِنۡكَ صَلَوَاتٌ وَ رَحۡمَةٌ وَ مَغۡفِرَةٌ

खुदाया मुझे इस मंज़िल पर उन लोगों में करार दे जिन तक तेरी सलवात और रहमत और

وَ لَا حَوۡلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَسۡتَوۡدِعُكُمَا اللّٰهَ

कोई ताकतो कुव्वत उसके अलावा नहीं है मैं आप दोनों हज़रात को उसी के सुपुर्द करता हूँ

وَ لَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اٰخِرَ الۡعَهۡدِ مِنِّیۡ اِلَیۡكُمَا

खुदा इस ज़ियारत को आखरी न करार दे

اِنۡصَرَفۡتُ یَا سَیِّدِیۡ یَا اَمِیۡرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَ مَوۡلَایَ

मेरे मौला अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) और हज़रत अबा अब्दिल्लाह (अ.स.) अय मेरे सरदार

وَ اَنۡتَ یَا اَبَا عَبۡدِ اللّٰهِ یَا سَیِّدِیۡ وَ سَلَامِیۡ عَلَیۡكُمَا

मैं वापस हो रहा हूँ और मेरा सलाम आप दोनों हज़रात पर

مُتَّصِلٌ مَا اتَّصَلَ اللَّیۡلُ وَ النَّهَارُ وَ اصِلٌ ذٰلِكَ اِلَیۡكُمَا

बरकरार रहे जब तक रात और दिन का सिलसिला काएम रहे और यह सलाम आप हज़रात तक पहोंचता रहे

غَیۡرُ مَحۡبُوۡبٍ عَنۡكُمَا سَلَامِیۡ اِنۡشَآءَ اللّٰهُ

उस राह में कोई चीज़ हाएल और हाजिव न बनने पाए। इन्शाअल्लाह

وَ اَسۡئَلُهٗ بِحَقِّكُمَا

मेरा सवाल परवरदिगार से आप दोनों के हक के वसीले से यह है

مُسْتَجَابًا بِقَضَآءِ جَمِيْعِ حَوَآئِجِیْ وَتَشَفَّعَا لِیْ اِلَی اللّٰهِ

तमाम हाजतों की तकमील के साथ हो। आप दोनों हज़रात मेरे शफी बन जाएं

اِنْقَلَبْتُ عَلٰی مَا شَآءَ اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

मैं मशीयते इलाही के सहारे वापस हो रहा हूँ उसके अलावा किसी के पास न ताकत है और न कुव्वत

مُفَوِّضًا اَمْرِیْ اِلَی اللّٰهِ مُلْجِأً ظَهْرِیْ اِلَی اللّٰهِ

मैं अपने मोआमेलात को खुदा के हवाले कर रहा हूँ और उसी को पुश्त पनाह करार

مُتَوَكِّلاً عَلَی اللّٰهِ وَاَقُوْلُ حَسْبِیَ اللّٰهُ وَكَفٰی

दे रहा हूँ उसी पर मेरा भरोसा है और कहता हूँ कि वह मेरे लिए काफी और वाफी है

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ دَعٰی لَیْسَ لِیْ وَرَآءَ اللّٰهِ

हर दुआ करने वाले की आवाज़ सुन लेता है। मेरे लिए उसके अलावा

وَوَرَآئَكُمْ یَاسَادَتِیْ مُنْتَهٰی

और आप हज़रात के अलावा कोई मरकज़ नहीं है।

مَا شَآءَ رَبِّیْ كَانَ وَمَا لَمْ یَشَأْ لَمْ یَكُنْ

जो मेरे खुदा ने चाहा वह हो गया जो उसने न चाहा वह न हो सका

मग्फेरत पहोंचने वाली है

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ مَحْیَایَ مَحْیَا مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

खुदाया मेरी ज़िन्दगी को मोहम्मद (स.अ.व.व.) और आले मोहम्मद (अ.स.) की ज़िन्दगी

وَمَمَاتِیْ مَمَاتَ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

और मेरी मौत को मोहम्मद (स.अ.व.व.) और आले मोहम्मद (अ.स.) जैसी मौत करार दे दे।

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا یَوْمٌ تَبَرَّكَتْ بِهٖ بَنُوْ اُمَیَّةَ وَابْنُ آكِلَةِ الْاَكْبَادِ

खुदाया यह वह दिन है जिसे बनी उमय्या और जिगर खाने वाली की अवलाद ने रोज़े बरकत करार दिया था

اللَّعِیْنُ ابْنُ اللَّعِیْنِ عَلٰی لِسَانِكَ وَلِسَانِ نَبِیِّكَ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَآلِهٖ

जिन पर तूने और तेरे पैगम्बर (स.अ.व.व.) ने लानत की है

فِیْ كُلِّ مَوْطِنٍ وَمَوْقِفٍ وَقَفَ فِیْهِ نَبِیُّكَ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَآلِهٖ

हर मकाम, हर मंज़िल और हर मक्कफ में जहाँ तेरे पैगम्बर (स.अ.व.व.) ने वुकूफ किया है

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ اَبَاسُفْیَانَ وَمُعَاوِیَةَ وَیَزِیْدَ بْنَ مُعَاوِیَةَ

खुदाया अवू सुफ्यान, मोआविया, यज़ीद विन मोआविया पर लानत कर

إِلَى اللهِ تَعَالٰى فِي حَاجَتِي هٰذِهٖ فَاشْفَعَا لِي فَإِنَّ لَكُمَا

अपनी इस हाजत में जो ज़ेरे नज़र है लेहाज़ा आप दोनों हज़रात मेरी सिफारिश कर दें कि आप के लिए

عِنْدَ اللهِ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ

अल्लाह की बारगाह में पसंदीदा मकाम है

وَالْجَاهَ الْوَجِيْهَ وَالْمَنْزِلَ الرَّفِيْعَ وَالْوَسِيْلَةَ

और नुमायां मर्तबा है और बलन्दतरीन मन्ज़िल और वसीला है

إِنِّيْ أَنْقَلِبُ عَنْكُمَا مُنْتَظِرًا لِتَنَجُّزِ الْحَاجَةِ وَقَضَآئِهَا

मैं आप की बारगाह से इस उम्मीद के साथ जा रहा हूँ कि मेरी हाजत पूरी हो जाएगी

وَنَجَاحِهَا مِنَ اللهِ بِشَفَاعَتِكُمَا لِيْ إِلَى اللهِ فِيْ ذٰلِكَ

और मुझे कामयाबी हासिल हो जाएगी परवरदिगार की बारगाह में आप की शफाअत के ज़रीए

فَلَآ أَخِيْبُ وَلَا يَكُوْنُ مُنْقَلَبِيْ مُنْقَلَبًا خَآئِبًا خَاسِرًا

लेहाज़ा अब मैं मायूस न होने पाऊँ और मेरी वापसी मायूसी, नाकामी और नुकसान के साथ न होने पाए

بَلْ يَكُوْنُ مُنْقَلَبِيْ مُنْقَلَبًا رَاجِحًا مُفْلِحًا مُنْجِحًا

बल्कि मेरी वापसी काम्याबी, कामरान, फायदेमंद,

عَلَيْهِمْ مِنْكَ اللَّعْنَةُ أَبَدَ الْآبِدِيْنَ

और उन सब पर तेरी लानत हो हमेशा हमेशा

وَهٰذَا يَوْمٌ فَرِحَتْ بِهٖ آلُ زِيَادٍ وَآلُ مَرْوَانَ بِقَتْلِهِمُ الْحُسَيْنَ صَلَوٰاتُ اللهِ عَلَيْهِ

यह वह दिन है जिस में आले ज़ियाद और आले मरवान ने खूशी मनाई के हुसैन (अ.स.) को कत्ल कर दिया है।

اَللّٰهُمَّ فَضَاعِفْ عَلَيْهِمُ اللَّعْنَ مِنْكَ وَالْعَذَابَ الْأَلِيْمَ

खुदाया उन पर अपनी तरफ से लानत और दर्दनाक अज़ाब को दुग्ना, चौगुना कर दे

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَتَقَرَّبُ إِلَيْكَ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ وَفِيْ مَوْقِفِيْ هٰذَا

खुदाया मैं तुझ से आप के दिन, इस मव्कफ (स्थिति) में

وَأَيَّامِ حَيٰوتِيْ بِالْبَرَائَةِ مِنْهُمْ وَاللَّعْنَةِ عَلَيْهِمْ

और तमाम ज़िन्दगी तकर्रुब चाहता हूँ उन सब से बेज़ारी, लानत

وَبِالْمُوَالَاتِ لِنَبِيِّكَ وَآلِ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ السَّلَامُ

और रसूल और आले रसूल की मोहब्बत के ज़रीए (उन तमाम हज़रात पर तेरा सलाम)

दुश्मनाने एहले बैत (अ.स.) पर लानत

(जिस को १०० मर्तबा तकरार करना है)

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ اَوَّلَ ظَالِمٍ ظَلَمَ حَقَّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

खुदाया लानत कर पहले ज़ालिम पर जिस ने मोहम्मद (स.अ.व.व.) और आले मोहम्मद (अ.स.) पर ज़ुल्म किया है

وَآخِرَ تَابِعٍ لَهُ عَلٰى ذٰلِكَ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْعِصَابَةَ الَّتِيْ جَاهَدَتِ الْحُسَيْنَ

और आखरी फर्द पर जो उनका इस राह में इत्तेवा करे खुदाया लानत कर उस गिरोह पर जिस ने हुसैन (अ.स.) से जंग की

وَشَايَعَتْ وَبَايَعَتْ وَتَابَعَتْ عَلٰى قَتْلِهٖ اَللّٰهُمَّ الْعَنْهُمْ جَمِيْعًا.

और उन के कत्ल के लिए ज़ालिमों का इत्तेवा किया और उनकी बयअत की खुदाया उन सब पर लानत नाज़िल फरमा।

शोहदाए करबला पर सलाम

(जिस को १०० मर्तबा तकरार करना है)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर या अबा अब्दिल्लाह!

وَلَا فَرَّقَ اللّٰهُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمَا

और हमारे आप के दर्मियान जुदाई पैदा न करे

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ حَيٰوةَ مُحَمَّدٍ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَمِتْنِيْ مَمَاتَهُمْ

खुदाया, मुझे मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) जैसी मौतो हयात इनायत फरमा

وَتَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهِمْ وَاحْشُرْنِيْ فِيْ زُمْرَتِهِمْ

उन्हीं के रास्ते पर दुनिया से उठाना और उन्हीं के ज़ुमरे में महशूर करना

وَلَا تُفَرِّقْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ طَرْفَةَ عَيْنٍ اَبَدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

मेरे और उनके दर्मियान दुनिया और आखेरत में पलक झपकने भर की जुदाई भी न होने पाए

يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَيَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ

अय अमीरल मोमेनीन (अ.स.) और अय अबू अब्दिल्लाह (अ.स.)

اَتَيْتُكُمَا زَائِرًا وَمُتَوَسِّلاً اِلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمَا

मैं आप दोनों का ज़ाएर और आप को परवरदिगार की बारगाह में वसीला करार देने वाला

وَمُتَوَجِّهًا اِلَيْهِ بِكُمَا وَمُسْتَشْفِعًا بِكُمَا

और आप के वसीले से तवज्जोह करने वाला और आप को शफी करार देने वाला हूँ

وَاصْرِفْ عَنِّيْ هَوْلَ مَا اَخَافُ هَوْلَهٗ

और जिस चीज़ के हौल से मैं खौफज़दा हूँ उसे मुझ से मोड़ दे

وَمَؤُنَةَ مَا اَخَافُ مَؤُنَتَهٗ وَهَمَّ مَا اَخَافُ هَمَّهٗ

और जिसकी तकलीफ से मैं खौफज़दा हूँ और जिस के खयाल से मैं परेशान हूँ

بِلَا مَؤُنَةٍ عَلٰى نَفْسِيْ مِنْ ذٰلِكَ

बगैर इसके कि मेरे नफ्स पर उसका कोई वोझ पडे

وَاسْرِفْنِيْ بِقَضَآءِ حَوَآئِجِيْ

और मुझे इस तरह वापस करना के मेरी हाजतें पूरी हो जाएं

وَكِفَايَةِ مَا اَهَمَّنِيْ هَمُّهٗ مِنْ اَمْرِ اٰخِرَتِيْ وَدُنْيَايَ

और दुनिया और आखेरत की हर परेशानी दूर हो जाए

يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَيَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ عَلَيْكُمَا مِنِّيْ سَلَامُ اللّٰهِ اَبَدًا مَا بَقِيْتُ

या अमीरल मोमेनीन (अ.स.) और या अवा अब्दिल्लाह (अ.स.) आप दोनों पर सलामे खुदा। हमेशा जब तक मैं बाकी रहूँ

وَبَقِيَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَلَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِكُمَا

और रात और दिन बाकी रहें अल्लाह इस हाज़री को आखरी न करार दे

وَعَلَى الْأَرْوَاحِ الَّتِيْ حَلَّتْ بِفِنَائِكَ

और उन पाक रूहों पर जो आप के साथ मुकीम हैं

عَلَيْكَ مِنِّيْ سَلَامُ اللّٰهِ اَبَدًا مَا بَقِيْتُ وَبَقِيَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ

मेरी तरफ से आप पर अल्लाह का सलाम जब तक मैं ज़िन्दा हूँ और जब तक दिन रात बाकी रहें

وَلَا جَعَلَهُ اللّٰهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنِّيْ لِزِيَارَتِكُمْ

अल्लाह इस ज़ियारत को आप की बारगाह में आखरी हाज़री न करार दे

اَلسَّلَامُ عَلَى الْحُسَيْنِ وَعَلٰى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ

सलाम हो हुसैन (अ.स.) पर और अली इब्ने हुसैन (अ.स.) पर

وَعَلٰى اَوْلَادِ الْحُسَيْنِ وَعَلٰى اَصْحَابِ الْحُسَيْنِ

और अवलादे हुसैन (अ.स.) और अस्हाबे हुसैन (अ.स.) पर।

तमाम कातेलाने हुसैन (अ.स.) पर लानत

फिर कहे:

اَللّٰهُمَّ خُصَّ اَنْتَ اَوَّلَ ظَالِمٍ بِاللَّعْنِ مِنِّيْ وَابْدَأْ بِهٖ اَوَّلًا ثُمَّ الْعَنِ الثَّانِيْ وَالثَّالِثَ وَالرَّابِعَ

खुदाया मेरी लानत को मख्सूस कर दे इस पहले शख्स से जिस ने ज़ुल्म किया है उस से इब्तेदा कर फिर दूसरे, तीसरे, चौथे पर लानत

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ يَزِيْدَ خَامِسًا وَ

खुदाया पांचवें मरहले पर यज़ीद पर लानत कर

الْعَنْ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ زِيَادٍ وَابْنَ مَرْجَانَةَ وَ عُمَرَ بْنَ سَعْدٍ

और फिर ओब्यदुल्लाह इब्ने ज़ियाद पर लानत और उमर इब्ने साद

وَ شِمْرًا وَ آلَ أَبِيْ سُفْيَانَ وَ آلَ زِيَادٍ وَ آلَ مَرْوَانَ

और शिम्र पर लानत कर, और अबू सुफीयान, ज़ियाद, मरवान की अल्लाद पर लानत कर

اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

कयामत तक।

सजदे की दुआ:

फिर सजदे में जा कर यह दुआ पढे :

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدَ الشَّاكِرِيْنَ لَكَ عَلٰى مُصَابِهِمْ

खुदाया तेरे लिए हम्द है वह हम्द जो शुक्रगुज़ार बन्दे मसाएब में किया करते हैं

اَلْحَمْدُ للهِ عَلٰى عَظِيْمِ رَزِيَّتِيْ

शुक्र है परवरदिगार का इस मुसीबत पर भी

وَ اِلَيْكَ الْمُشْتَكٰى وَ اَنْتَ الْمُسْتَعَانُ

तुझ से ही शिक्वा है और तेरी ही मदद चाहिए

فَاسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ

मेरा सवाल तुझ ही से है अय अल्लाह अय अल्लाह अय अल्लाह

بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

मोहम्मदो आले मोहम्मद (अ.स.) का वास्ता मोहम्मदो आले मोहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़िल फरमा

وَ اَنْ تَكْشِفَ عَنِّيْ غَمِّيْ وَ هَمِّيْ وَ كَرْبِيْ فِيْ مَقَامِيْ هٰذَا

और मेरे हम्म और गम और रंज को इस वक्त इसी तरह दूर कर दे

كَمَا كَشَفْتَ عَنْ نَبِيِّكَ هَمَّهٗ وَ غَمَّهٗ وَ كَرْبَهٗ

जिस तरह तूने अपने पैगम्बर (स.अ.व.व.) से हम्म और गम और रंज और कर्ब को दूर फरमाया है

وَ كَفَيْتَهٗ هَوْلَ عَدُوِّهٖ فَاكْشِفْ عَنِّيْ كَمَا كَشَفْتَ عَنْهُ

और उनके लिए दुश्मनों के खौफ से काफी हो गया है अब मुझ से भी हर रंज और गम को दूर कर दे

وَ فَرِّجْ عَنِّيْ كَمَا فَرَّجْتَ عَنْهُ وَ اكْفِنِيْ كَمَا كَفَيْتَهٗ

और कशाइशे हाल अता फरमा और मेरे लिए काफी हो जा

خَابَ مَنْ كَانَ جَارُهٗ سِوَاكَ

वह नाकाम हो गया जिसका हमसाया तेरे अलावा कोई हो

وَ مُغِيْثُهٗ سِوَاكَ وَ مَفْزَعُهٗ اِلٰى سِوَاكَ وَ مَهْرَبُهٗ اِلٰى سِوَاكَ

या जिसका फर्यादरस तेरे सिवा कोई हो या जिसकी फर्याद और जिसका फरार तेरे अलावा किसा और की तरफ हो

وَ مَلْجَؤُهٗ اِلٰى غَيْرِكَ وَ مَنْجَاهُ مِنْ مَخْلُوْقٍ غَيْرَكَ

या जिस का मलजा और मावा तेरे अलावा कोई और हो

فَاَنْتَ ثِقَتِيْ وَ رَجَآئِيْ وَ مَفْزَعِيْ وَ مَهْرَبِيْ وَ مَلْجَائِيْ وَ مَنْجَايَ

तू मेरा भरोसा, मेरी उम्मीद, मेरी पनाहगाह, मेरा मलजाओ मावा, मेरी मंज़िले नजात है

فَبِكَ اَسْتَفْتِحُ وَ بِكَ اَسْتَنْجِحُ وَ بِمُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ

तुझ से कामयाबी और कामरानी का सवाल है और मोहम्मद और आले मोहम्मद (अ.स.) के वसीले से

اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ وَ اَتَوَسَّلُ وَ اَتَشَفَّعُ

तेरी तरफ तवज्जोह और तवस्सुल और शफाअत है

فَاَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ فَلَكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ

मेरा सवाल तुझही से है अय अल्लाह अय अल्लाह अय अल्लाह हम्द सिर्फ तेरे लिए और शुक्र सिर्फ तेरे लिए है

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ شَفَاعَةَ الْحُسَيْنِ يَوْمَ الْوُرُوْدِ

खुदाया मुझे हुसैन (अ.स.) की शफाअत नसीब कर जब तेरी बारगाह में हाज़िर हूँ

وَ ثَبِّتْ لِيْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَكَ مَعَ الْحُسَيْنِ وَ اَصْحَابِ الْحُسَيْنِ

और मुझे अपनी बारगाह में सेबाते कदम इनायत फरमा और इमाम हुसैन (अ.स) और उन के असहाव के साथ

اَلَّذِيْنَ بَذَلُوْا مُهَجَهُمْ دُوْنَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ.

जिन्होंने अपनी जानें कुरबान कर दीं हुसैन (अ.स.) के हुज़ूर में

وَخُذْ عَنِّيْ بِسَمْعِهٖ وَبَصَرِهٖ وَلِسَانِهٖ وَيَدِهٖ وَرِجْلِهٖ

और मेरी तरफ से उसके कान, आँख, ज़वान, हाथ, पाँव,

وَقَلْبِهٖ وَجَمِيْعِ جَوَارِحِهٖ

दिल, और तमाम आज़ाओ जवारेह को अपनी गिरफ्त में ले ले

وَاَدْخِلْ عَلَيْهِ فِيْ جَمِيْعِ ذٰلِكَ السُّقْمَ وَلَا تَشْفِهٖ

और उन सब को बीमारीयों का शिकार बना दे और उस वक्त तक शफा न देना

حَتّٰى تَجْعَلَ ذٰلِكَ لَهٗ شُغْلاً شَاغِلاً بِهٖ عَنِّيْ وَعَنْ ذِكْرِيْ

जब तक कोई ऐसा मश्गला न निकल आए जो मेरी तरफ से और मेरी याद से गाफिल कर दे

وَاكْفِنِيْ يَا كَافِيْ مَا لَا يَكْفِيْ سِوَاكَ

तू मेरे लिए काफी हो जा अय उस काम के लिए काफी जिसके लिए तेरे अलावा कोई किफायत करने वाला नहीं है

فَاِنَّكَ الْكَافِيْ لَا كَافِيَ سِوَاكَ وَمُفَرِّجٌ لَا مُفَرِّجَ سِوَاكَ

तू काफी है और तेरे अलावा कोई काफी नहीं है तू रंजो गम का दूर करने वाला है और तेरे अलावा ऐसा कोई नहीं है

وَمُغِيْثٌ لَا مُغِيْثَ سِوَاكَ وَجَارٌ لَا جَارَ سِوَاكَ

तू फरयादरस है तेरे अलावा फरयादरस नहीं और तू पनाहगाह है जिस के अलावा पनाहगाह नहीं

दुआए अल्कमा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

खुदाए रहमान और रहीम के नाम से शुरू करता हूँ।

يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ

अय अल्लाह, अय अल्लाह, अय अल्लाह, अय मुज़तरिब अफराद की आवाज़ सुनने वाले

يَا كَاشِفَ كُرَبِ الْمَكْرُوْبِيْنَ

अय परेशान हालों की परेशानियां दूर करने वाले

يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصْرِخِيْنَ

अय फर्यादियों के फर्याद रस, अय नालाओ ज़ारी करने वालों पर रहम करने वाले

وَيَا مَنْ هُوَ اَقْرَبُ اِلَيَّ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ

अय वह खुदा जो मुझ से रगे गर्दन से ज़्यादा करीब है

وَيَا مَنْ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ

अय वह खुदा जो इन्सान और उस के दिल के दर्मियान हाएल हो जाता है

وَيَا مَنْ هُوَ بِالْمَنْظَرِ الْاَعْلٰى وَبِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ

अय वह खुदा जो बलन्द तरीन मंज़र और नुमायां तरीन बलन्दी पर है

اَللّٰهُمَّ اشْغَلْهُ عَنِّیْ بِفَقْرٍ لَا تَجْبُرُهٗ

खुदाया मेरी तरफ से उसे ऐसा फक्र में मुब्तेला कर दे जिस का इलाज न हो

وَبِبَلَآءٍ لَا تَسْتُرُهٗ وَبِفَاقَةٍ لَا تَسُدُّهَا وَبِسُقْمٍ

और ऐसी बला में जिस को छुपाया न जा सके और ऐसे फाके में जिस का मदावा न हो

لَا تُعَافِيْهِ وَذُلٍّ لَا تُعِزُّهٗ وَبِمَسْكَنَةٍ لَا تَجْبُرُهَا

और ऐसी बीमारी में जिस की सेहत न हो, और ऐसी ज़िल्लत में जिस की इज़्ज़त न हो और ऐसी मस्कनत में जिस का तदारुक (उपाय) न हो सके

اَللّٰهُمَّ اضْرِبْ بِالذُّلِّ نَصَبَ عَيْنَيْهِ

खुदाया उस के निशाने को ज़िल्लत का शिकार बना दे

وَاَدْخِلْ عَلَيْهِ الْفَقْرَ فِيْ مَنْزِلِهٖ وَالْعِلَّةَ وَالسُّقْمَ فِيْ بَدَنِهٖ

और उसके घर में फक्रो फाका और उसके बदन में बीमारी और आज़ारी को दाखिल कर दे

حَتّٰى تَشْغَلَهٗ عَنِّیْ بِشُغْلٍ شَاغِلٍ لَا فَرَاغَ لَهٗ

ताकि उसे इस तरह मश्गूल कर दे के मेरे लिए उसे फुरसत ही न मिले

وَاَنْسِهٖ ذِكْرِیْ كَمَا اَنْسَيْتَهٗ ذِكْرَكَ

और उस के ज़हन से मेरा खयाल निकाल दे जिस तरह तेरा खयाल निकल गया है

وَيَا مَنْ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى

अय वह रहमानो रहीम जो अर्श पर इक्तेदार रखता है

وَيَا مَنْ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ

अय वह खुदा जो आँखों की खयानत और दिलों के राज़ों से वाखवर है

وَيَا مَنْ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ خَافِيَةٌ يَا مَنْ لَا تَشْتَبِهُ عَلَيْهِ الْاَصْوَاتُ

अय वह खुदा जिस पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है अय वह खुदा जिस पर आवाज़ें मुश्तवेह नहीं होती हैं

وَيَا مَنْ لَا تُغَلِّطُهُ الْحَاجَاتُ وَيَا مَنْ لَا يُبْرِمُهٗ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ

और मुख्तलिफ हाजतें गल्ती का शिकार नहीं बनाती हैं अय वह खुदा जिसे इसरार करने वालों का इसरार खस्ता हाल नहीं कर सकता है

يَا مُدْرِكَ كُلِّ فَوْتٍ وَيَا جَامِعَ كُلِّ شَمْلٍ وَيَا بَارِءَ النُّفُوْسِ بَعْدَ الْمَوْتِ

अय हर गुज़र जाने को पा लेने वाले और हर परागन्दा को जमा कर देने वाले अय मौत के बाद नफ्सों को दोबारा ज़िन्दगी देने वाले

يَا مَنْ هُوَ كُلَّ يَوْمٍ فِيْ شَانٍ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ

अय वह खुदा जो हर रोज़ एक नई शान रखता है और अय हाजतों के पूरा करने वाले

يَا مُنَفِّسَ الْكُرُبَاتِ يَا مُعْطِيَ السُّئُولَاتِ

अय रंजो गम के दूर करने वाले, मुतालेबात के अता करने वाले

يَا وَلِيَّ الرَّغَبَاتِ يَا كَافِيَ الْمُهِمَّاتِ

अय रग्बतों के पूरा करने वाले, अय मुश्किलात में काफी हो जाने वाले

يَا مَنْ يَكْفِي مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا يَكْفِي مِنْهُ شَيْءٌ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

अय हर चीज़ से काफी हो जाने वाले, जिस से ज़मीनो आसमान की कोई चीज़ बेनियाज़ नहीं बना सकती है

اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ خَاتِمِ النَّبِيِّيْنَ وَ عَلِيٍّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

मेरा तुझ से सवाल है हज़रत मोहम्मद (स.अ.व.व.) खातेमुन नबीय्यीन व अली अमीरिल मोमेनीन (अ.स.),

وَبِحَقِّ فَاطِمَةَ بِنْتِ نَبِيِّكَ وَبِحَقِّ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ

फातेमा (अ.स.) बिन्ते रसूले अकरम (स.अ.व.व.) और हसनो हुसैन (अ.स.) के हक के वास्ते से

فَاِنِّيْ بِهِمْ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ فِيْ مَقَامِيْ هٰذَا وَبِهِمْ اَتَوَسَّلُ وَبِهِمْ اَتَشَفَّعُ اِلَيْكَ

के मैं इस वक्त उन्हीं के वसीले से तेरी बारगाह में हाज़िर हुआ हूँ उन्हीं को वसीला और शफी करार देता हूँ

وَمَكْرِ مَنْ اَخَافُ مَكْرَهٗ وَبَغْيِ مَنْ اَخَافُ بَغْيَهٗ

और जिस के मक्र से तरसां और ज़ुल्म से परेशान हूँ

وَجَوْرِ مَنْ اَخَافُ جَوْرَهٗ وَسُلْطَانِ مَنْ اَخَافُ سُلْطَانَهٗ

और जिस के जौर से डरता हूँ या सलतनतो इख्तेयार से खौफ़ज़दा हूँ

وَ كَيْدِ مَنْ اَخَافُ كَيْدَهٗ وَمَقْدُرَةِ مَنْ اَخَافُ مَقْدُرَتَهٗ عَلَيَّ

और जिस के कैद से परेशान हूँ या कुदरतो ताकत से डरता हूँ

وَتَرُدَّنِيْ عَنِّيْ كَيْدَ الْكَيْدَةِ وَمَكْرَ الْمَكْرَةِ

मुझ से तमाम मक्कारियों के मक्र और हीला करने वालों के फरेब को पलटा दे

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَرَادَنِيْ فَاَرِدْهُ وَمَنْ كَادَنِيْ فَكِدْهُ

खुदाया जो मेरा बुरा चाहे उसे तू बदला देना और जो मुझ से मक्कारी करे उसे तू सज़ा देना

وَاصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهٗ وَمَكْرَهٗ وَبَاْسَهٗ وَاَمَانِيَّهٗ

मुझ से उस के कैदो मक्रो शर और उस की आरज़ूओं को रद कर देना

وَامْنَعْهُ عَنِّيْ كَيْفَ شِئْتَ وَاَنّٰى شِئْتَ

और उसे मेरी तरफ से रोक देना जैसा तू चाहे और जिस तरह चाहे

وَبِحَقِّهِمْ اَسْئَلُكَ وَاُقْسِمُ وَاَعْزِمُ عَلَيْكَ وَبِالشَّاْنِ الَّذِیْ لَهُمْ عِنْدَكَ

और उन्हीं के हक के वास्ते से सवाल करता हूँ और तुझे कसम देता हूँ उन के हक और उनके मर्तवे की जो तेरे नज़दीक है

وَبِالْقَدْرِ الَّذِیْ لَهُمْ عِنْدَكَ وَبِالَّذِیْ فَضَّلْتَهُمْ عَلَى الْعَالَمِیْنَ

और इस कद्रो मंज़ेलत की जो तेरी बारगाह में है और जिस के ज़रीए तू उन्हें आलमीन अफज़ल करार दिया है

وَبِاسْمِكَ الَّذِیْ جَعَلْتَهٗ عِنْدَهُمْ وَبِهٖ خَصَصْتَهُمْ دُوْنَ الْعَالَمِیْنَ

और तेरे उस इसमे आअज़म के वास्ते से जो तूने उनके पास रखा है और जिस से तमाम आलमीन में उन्हें मखसूस किया है

وَبِهٖ اَبْنَتَهُمْ وَاَبْنَتْ فَضْلَهُمْ مِنْ فَضْلِ الْعَالَمِیْنَ

और उस से उन्हें और उन के फज़्ल को

حَتّٰى فَاقَ فَضْلُهُمْ فَضْلَ الْعَالَمِیْنَ جَمِیْعًا

आलमीन से जुदा नहीं बनाया है

اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

मेरा सवाल यह है कि मोहम्मद (स.अ.व.व.) और आले मोहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़िल फरमा

وَاَنْ تَكْشِفَ عَنِّیْ غَمِّیْ وَهَمِّیْ وَكَرْبِیْ

और मेरे गम और हम्म और रंज को दूर फरमा

وَتَكْفِیَنِی الْمُهِمَّ مِنْ اُمُوْرِیْ وَتَقْضِیَ عَنِّیْ دَیْنِیْ

मेरे अहम कामों में काफी हो जा। मेरे कर्ज़ को अदा कर दे

وَتُجِیْرَنِیْ مِنَ الْفَقْرِ وَتُجِیْرَنِیْ مِنَ الْفَاقَةِ وَتُغْنِیَنِیْ عَنِ الْمَسْئَلَةِ اِلَى الْمَخْلُوْقِیْنَ

मुझे फक्र से पनाह और फाके से नजात इनायत फरमा और मुझ को मख्लूकात से सवाल करने से बेनियाज़ बना दे

وَتَكْفِیَنِیْ هَمَّ مَنْ اَخَافُ هَمَّهٗ وَعُسْرَ مَنْ اَخَافُ عُسْرَهٗ

और मेरे लिए हर उस चीज़ के खयाल से काफी हो जा जिस का खयाल खौफनाक है और जिस की तंगी से मैं खौफज़दा हूँ

وَحُزُوْنَةَ مَنْ اَخَافُ حُزُوْنَتَهٗ وَشَرَّ مَنْ اَخَافُ شَرَّهٗ

और जिस के रंज से रंजीदा और शर से परेशान हूँ